विस्तार पत्रक- रा.उ.अनु.के./2017/06

# ऊँटों को दवा देने के तरीके और सावधानियाँ

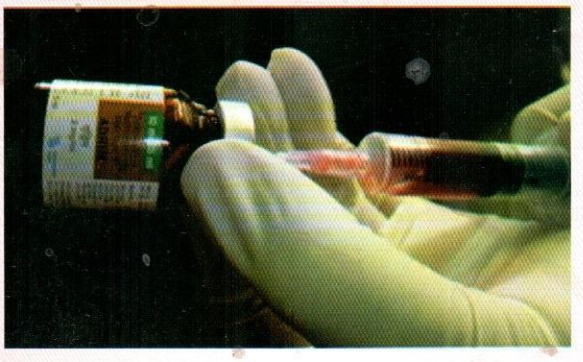

राकेश रंजन
काशीनाथ
एफ. सी. टुटेजा
एन. वी. पाटिल

भाकृअनुप
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसन्धान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी,
बीकानेर 334001 ( राजस्थान )

बीमारी का इलाज या स्वास्थ्य/ उत्पादन संवर्धन हेतु कई प्रकार की दवाएं ऊँटों को देनी होती है। कई बार ऊँट पालक दवा देने के विभिन्न तरीकों से वाकिफ नहीं होते। इसके कारण उन्हें या तो बार–बार पशुचिकित्सक/ विशेषज्ञ को बुलाना पड़ता है या कई बार गलत तरीके से दवा देने के कारण नुकसान का सामना करना पड़ता है। अत: विभिन्न प्रकार की दवाओं के देने के सही तरीकों का ज्ञान ऊँट पालक के लिए आवश्यक है।

**मुंह से दवा देना/ पिलाना :**

कई प्रकार के सीरप/गोलियां/चूरन/पाउडर/ मिश्रण/ जेल इत्यादी ऊँटों को मुंह से खिलाना या पिलाना होता है। सीरप/काढ़े या पानी में घुलने वाली दवाओं को साफ पानी में घोलकर सीधे मुंह खोलकर पिलाया जा सकता है। दवा पिलाते समय इस बात का ख्याल रखें कि गर्दन जमीन या शरीर के सामानांतर रहे। गर्दन ऊपर करके दवा पिलाने से दवा के फेफड़े में जाने का खतरा रहता है। कई पशुपालक दवा पिलाते समय जीभ को पकड़ लेते हैं ताकि दवा सीधे अंदर चली जाए। ऐसा बिल्कुल नहीं करना चाहिये, इसके विपरीत इस बात का ख्याल रखा जाना चाहिये कि दवा देते समय पशु अपनी इच्छा अनुसार अपने जीभ को चला सके। ऐसा करने से दवा के फेफड़े में जाने का खतरा नहीं रहता।

गोलियों को बारीक कर पाउडर बना लें, फिर उसे गुड़/ आटे या किसी अन्य खाद्य पदार्थ में मिलाकर दे दें। आरंभ में कई ऊँट दवा मिला हुआ आटा खाने में संकोच कर सकता हैं। ऐसी परिस्थिति में आटे की छोटी-छोटी गोलियां बनाकर उसे एक बड़े बर्तन में ऊँटों के आगे रख दें। हो सकता है, एक को खाते देख दूसरा भी खाने लगे। कई बार ऊँट दवा मिला हुआ गुड़ या आटा बिलकुल नहीं खाता। ऐसी स्थिति में गोली को मुंह खोलकर तेजी से अन्दर गले में डाल दें और उसे निगलने तक जबरन मुंह कों बंद रखें, पर जीभ कभी न पकड़े।

चूरन/ पाउडर/ खनिज लवण मिश्रण को सीधे मुंह में

डालने की जगह उसे गुड़/आटे या किसी अन्य खाद्य पदार्थ में मिलाकर दें या पानी में घोलकर पिला दें।

**मलहम/जैल/लोशन लगाना :**

त्वचा पर हुए जख्मों को अच्छी तरह से स्वच्छ गुनगुने पानी से साफ सूती कपड़े/रुई की मदद से साफ करने के बाद दवा लगाने से उसका असर ज्यादा होता है। यदि संभव हो सके तो जख्मों की सफाई करने/दवा लगाने से पहले हाथ में प्लास्टिक या रबर के दस्ताने (ग्लव्स) पहन लें। इससे दवा लगाने वाला दवा के असर से बचा रहता है। दवा लगाने के तुरंत बाद मुंह को एक दो घंटे के लिए बांध दें ताकि ऊँट दवा चाट न सके। ऐसे घाव जिससे पानी जैसा स्राव निकल रहा हो, पर पट्टी न बांधें। पर जिन घावों को कव्वे बार-बार चोंच मारते हों उन पर दवा लगाकर पट्टी अवश्य लगाएं। जिन घावों में कीड़े पड़ गए हों उन्हें पशु चिकित्सक से सफाई कराकर ही दवा लगायें।

**चिचड़/मक्खी/मच्छर/जूं इत्यादि मारने वाली दवा का छिड़काव :**

ऐसी दवाएं आमतौर पर जहरीली होती हैं। इनके छिड़काव के पहले पशु का मुंह बांध दें ताकि वो दवा न चाट सके। दवा के इस्तेमाल के पहले तौलिये से अपना नाक और मुंह ढक लें और हाथ में दस्तानें (ग्लब्ज़) पहन लें। पशु को चारा खिलाने और पानी पिलाने के बाद दवा का छिड़काव करना बेहतर होता है क्योंकि तब दवा के चाटने का खतरा कम होता है। यदि शरीर पर बड़ा जख्म हो तो उन पर दवा न छिड़कें। जरुरी हो तो पहले जख्मों पर मलहम या वेसलीन लगाने के बाद दवा छिड़कें। दवा छिड़कने के बाद पशु पर निगरानी रखें। पशु चिकित्सक की सलाह पर दवा लगाने के कुछ समय बाद साफ पानी से पशु को नहलाएं या पशु को बिना नहाये थोड़ीं देर धूप में रहने दें। आमतौर पर जब त्वचा सूख जाती है तो जहर का असर भी कम हो जाता है। यदि किसी कारण दवा को ऊँट ने चाट लिया हो और मुंह से लार/झाग गिरने लगे तो तुरंत पशु चिकित्सक से संपर्क करें।

## मांस या नस में इंजेक्शन लगाना

मांस या नस में इंजेक्शन लगाने का काम पशु चिकित्सक, कम्पाउण्डर या समुचित प्रशिक्षण प्राप्त व्यक्तियों द्वारा ही किया जाना चाहिये। पशु पालक इस बात का ध्यान रखें कि इंजेक्शन में हमेशा नई सुई का इस्तेमाल हो और इंजेक्शन लगाने के पहले स्पिरिट से त्वचा को साफ किया जाए। यदि इंजेक्शन लगाने के बाद उस स्थान पर सूजन आ गयी हो तो पशु चिकित्सक की सलाह पर गरम पानी में नमक डालकर सेंक करें या बर्फ मलें।

इस बात का हमेशा ध्यान याद रखना चाहिये कि कोई भी दवा पशुचिकित्सक की सलाह पर ही देना उचित होता है। गलत / जरुरत से ज्यादा /अनावश्यक दवा से पशु स्वास्थ्य को नुकसान पहुंच सकता है या पशु की मृत्यु तक हो सकती है।

## इन परिस्थितियों में दवा के इस्तेमाल में विशेष ध्यान रखें -

1. जब पशु ज्यादा कमजोर हो या कम उम्र का हो।
2. जब पशु ने कई दिनों से पानी न पिया हो अथवा चारा न खाया हो।
3. जब सांडनी गर्भवती हो, खासकर जब गर्भकाल के अंतिम दो तीन महीने बचे हों।
4. जब दवा पर जहरीले होने का निशान बना हो।

## ऐसी दवाएं हरगिज न दें

1. जिनका एक्सपायरी डेट निकल गई हो।
2. जिन दवाओं पर एक्सपायरी डेट / उत्पादक का पता न लिखा हो।
3. जो दवा पैकिंग से बाहर निकलकर काफी समय तक खुले में रखी गयी हो।
4. कई दवाएँ पाउडर के रूप में आती हैं जिन्हें पानी में घोलकर लगाना होता है। एक बार घोलने के बाद पूरी दवा का इस्तेमाल कर लें। बची हुई दवा का प्रयोग बाद में न करें।

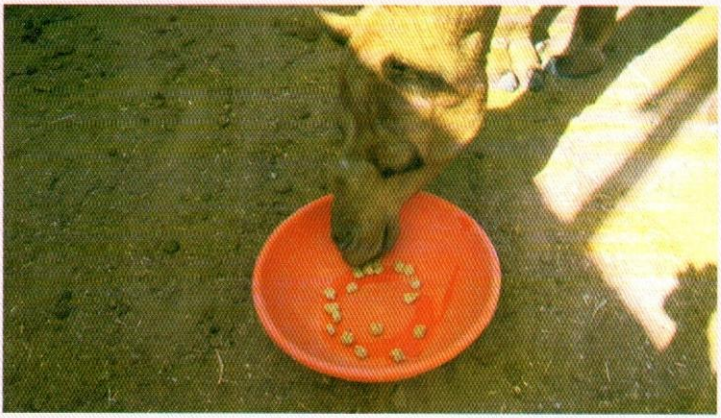

चित्र 1 ( क ) दवा को आटे में मिलाकर
उसकी छोटी-छोटी गोलियां बनाकर देना।

( ख ) मुंह खोलकर सीरप पिलाना.
यह कम उम्र के ऊँटों के लिए एक आसान तरीका है।

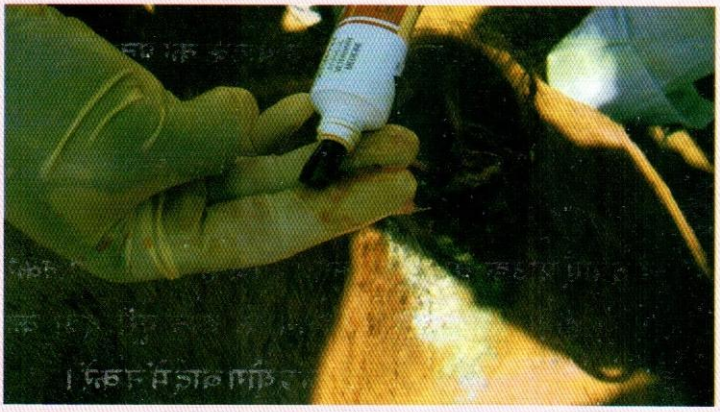

चित्र 2 ( क ) घावों पर मलहम लगाना ।

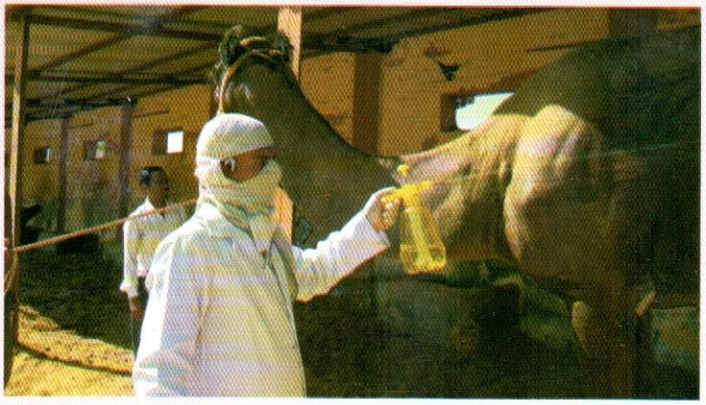

( ख ) चिचड़/ मक्खी/ मच्छर/ जूं इत्यादि
मारने वाली दवा का छिडकाव।

यदि कोई दवा लगाने या पिलाने के बाद पशु बैचेन होने लगे, कांपने लगे, मुँह से झाग आने लगे या साँस लेने में मुश्किल आ रही हो तो तुरन्त पशु चिकित्सक से सम्पर्क करें।


**प्रकाशक**

निदेशक, भा.कृ.अनु.प.
राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र



**लेखक**

राकेश रंजन, काशीनाथ, एफ.सी. टुटेजा, एन.वी. पाटिल

भा.कृ.अनु.प.-राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र
जोड़बीड़, शिवबाड़ी, बीकानेर -334001 ( राजस्थान )
दूरभाष : 0151-2230183
फैक्स : 0151-2970153

मुद्रक-किशन एन्टरप्राईजेज, बीकानेर मो. 9829018501